दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): अनुपम जाखड़

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 7 / 27/09/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 5 5 3 7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anupam

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 122½

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। लेखन शैली अच्छी है। प्रश्न में व्याख्याओं को थोड़ा और बेहतर बनाने का प्रयास करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) यहु तन जालौं मसि करूं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

संदर्भ :- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर ग्रंथावली की 'दोहावली' के 'विरह को अंग' भाग से संकलित हैं।

प्रसंग :- यहाँ कबीर का ब्रह्म के प्रति विरह प्रकट हुआ है। यहाँ राम से विरह अग्नि बुझाने का निवेदन हुआ है।

व्याख्या :- कबीर कहते हैं कि यह तन विरह की अग्नि में झुलस रहा है तथा स्वर्ग में धुआँ जा रहा है। अतः भगवान (ब्रह्म) मेरे प्रति दयावान दिखाइये। आप कृपा की बारिश वर्षा करके मेरी विरह - अग्नि को शांत कीजिये।

यहाँ कबीर का ब्रह्म के प्रति विरह-विदग्ध होना प्रकट हुआ है।

विशेष :- 1) कबीर लोकभाषा व दोहा छंद का प्रयोग कर रहे हैं।
2) यहाँ अद्वैत दर्शन व रहस्यवाद प्रकट हुआ है।
3) खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप यहाँ दिखाई देता है।
4) मुक्तक रचना का अंश।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे है जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझै।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझै।।

संदर्भ व प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ सूरदास द्वारा रचित व आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा संकलित भ्रमरगीतसार से उद्धृत हैं।

यहाँ पर गोपियाँ उद्धव से पूछती हैं कि किस तरह भगवान कृष्ण को भुला दें।

व्याख्या:- गोपियाँ कहती हैं कि हृदय में तो माखनचोर भगवान श्रीकृष्ण स्थापित हैं। उनको निर्वासित करना कैसे संभव है। अहीर होते हुए भी यशोदानंदन श्रीकृष्ण अपनी जाति नहीं छोड़ेंगे। कौन देवकी है तथा कौन वसुदेव हैं ये कोई नहीं पूछने वाला। अर्थात् हमें सिर्फ श्रीकृष्ण से मतलब है, उनको देखकर ही हमें शांति मिलेगी।

उनको देखे बिना कोई उपाय नहीं सूझेगा।

विशेष:-
1) गोपियों का प्रेम भाव प्रकट हुआ है।
2) ब्रजभाषा में गोपियों के संवाद, वक्रता युक्त है।
3) यहाँ पर लयात्मकता व गेयात्मकता है।
4) अंतिम पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

5/10

थोड़ा और बेहतर बनाएं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

संदर्भ व प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के रचनाकार जायसी की पद्मावत् रचना के नागमती वियोग खण्ड से ली गई हैं,

यहाँ पर नागमति अपने पति के समीप न होने पर विरह-विदग्ध है। प्रकृति का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या:- ~~मोर~~ मोर व कोयल की आवाज में भी नागमती को विरह की अनुभूति होती है। उसके हृदय में वेदना है। पुख नक्षत्र आने पर उसकी विरह भावना और घनीभूत हो रही है। जिसके घर में पति है वही सुखी है, वही गर्व वाला है।

नागमती कहती है कि पति बाहर होने से वह इस पावन पर्व पर भी सारे सुख भूल गई है।

विशेष:- 1) प्रकृति को विरह में शामिल करना राम के विरह में दिखा है (तुलसीदास)। जायसी का अन्य उदाहरण -

बरसे मेघा झकोर झकोरी मोरे ~~दुई~~ दुई नैन चुवैं जस ओरी।

2) जायसी कड़वक छंद का प्रयोग करते हैं।

3) ठेठ अवधी की मिठास परंतु लौकिक विरह। यह विरह एक रानी का न होकर सामान्य स्त्री का है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रासंगिकता :- यहाँ पर सामाजिक प्रेम व विरह का चित्रण है। यह मध्यकालीन नारी की स्थिति का वर्णन भी करता है। आज भी इस तरह का विरह सामाजिक आदर्श है।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध मैं परति चौधि सी डीठि।।

संदर्भ व प्रसंग:— प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीर की 'दोहावली' ~~से संकलित है।~~

बिहारी

यहाँ पर कबीर ~~हँसी व~~ हँसी व वाणी का महत्व बताया गया है।

व्याख्या:— यहाँ पर कबीर कहते है कि ~~की~~ हँसी त्यागने

विशेष:— 1) यहाँ द्वितीय पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।
2) सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग है।
3)

0

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियां प्रगतिशील जनवादी कवि नागार्जुन की दलित-अत्याचार पर रचित कविता हरिजनगाथा से उद्धृत हैं।

यहाँ पर नागार्जुन क्रांति-चेतना की बात करते हैं तथा बालकों को भावी पीढ़ी में समता स्थापित करने वाला बता रहे हैं।

व्याख्या :-

नागार्जुन कहते हैं कि इस बालक को यहाँ से हटा दो। यह विद्रोह करेगा। अपने साथियों से मिलकर यहाँ पर समतामूलक समाज की स्थापना करेगा।

यह उनका नेतृत्व करेगा, यशस्वी बनेगा तथा इसकी कीर्ति अखबारों में छपेगी। इससे मिलने के लिए नेता व बड़ी हस्तियाँ आयेंगी। इस प्रकार बालक में नागार्जुन भावी नेतृत्व को देखते हैं।

विशेष :- 1) दलित चेतना का उदय
2) समाजवादी व्यवस्था व समाज से अत्याचार हटाने का संकल्प
3) भाषा में लयात्मकता।
4) बड़ी लंबी कविता का अंश

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5) भाषा गद्दी हुई, ~~सरल~~ सहज व पारदर्शी,

दलित-अत्याचार अभी भी विद्यमान है इसलिए इन पंक्तियों की प्रासंगिकता समाज को जागृत करने में है।

और है

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) बिहारी की बहुज्ञता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी रीतिकालीन ~~कवी~~ कवि हैं तथा दरबारी कवि होने के कारण उनकी रचनाओं में शृंगार रस व रसिकता की प्रधानता है। परंतु बिहारी ने अपनी रचना 'बिहारी सतसई' के 713 दोहों में विभिन्न विषयों पर चर्चा की है।

बिहारी ने मुक्तक शैली में रसिक वर्ग को रिझाने के लिए भाव-अनुभाव का संगम प्रस्तुत किया है। वे अर्थगूढ़त्व व भाषा की समाहार क्षमता के लिए ~~प्रसिद्ध~~ प्रसिद्ध हैं। यह उनके इस दोहे में परिलक्षित होता है —

"कहत नटत खिझत ~~रिझत~~ रिझत,
मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौवन में नैननही सो करे बात।।"

* बिहारी चिंतापरक, राजनीति के विचारक व गणित के ~~ज्ञा~~ जानकार भी थे। दरबारी होने के बावजूद आम जनता को समझते थे। धर्म के पाखंड पर व्यंग्य करते हुए कहा —

"जप माला छापा तिलक, सरे न एकौ काम।
मन काँचे नाचे वृथा, साँचे राचे राम।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी ने जयपुर के राजा को राजधर्म की ओर आकृष्ट करने के लिए कहा -

'नहीं पराग, नहीं मधुर मधु, नहीं विकास इहिं काल,
अलि कली ही सों बंध्यो, आगे कौन हवाल।'

इसी तरह जीवन के अनुभव से अर्जित ज्ञान भी बिहारी के दोहों से प्रकट होता है। यहाँ बिहारी समाज की गहरी समझ रखते हैं। बिहारी प्रेम की महत्ता पर कहते हैं - 'राज राजसु न छुवाइए, नेह चीकनो चीत'।

बिहारी के यहाँ गणित जैसे विषय की महत्ता भी उजागर होती है - "सब कहत बैन्दी दिए, अंक दस गुणो होत।" इसी तरह बिहारी में जीवन के विविध विषयों का ज्ञान दिखाई देता है। बिहारी सतसई नीतिपरक व धर्म-संबंधी जानकारी भी लिए हुए है।

बिहारी के यहाँ राधा का प्रेम भी दिखाई देता है। राधा-कृष्ण के ऊपर बिहारी ने लिखा -

"मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोई
जा तन की झांई परै, स्याम द्युति होई।"

इस प्रकार बिहारी सिर्फ नख-शिख वर्णन के कवि नहीं है यहाँ पर विज्ञान, राजनीति, नीति, धर्म, भक्ति जैसे विविध विषयों का ज्ञान समाहित है। बिहारी के लिए इसलिए कहा है -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'सतसैया के दोहे, अरु नाविक के तीर

देखन में छोटन लागे, घाव करे अति गंभीर" ।

"और गहराई से कुछ अन्य पक्षों की भी चर्चा करें"

10/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) क्या नागमती का विरह-वर्णन मध्यकालीन नारी की दासता का चित्रण है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'पद्मावत' जायसी की प्रतिनिधि रचना है। इसे प्रेमाख्यान माना गया है। विरह प्रेम की महत्वपूर्ण व आवश्यक सीढ़ी है। यहाँ विरह रत्नसेन, पद्मावती व नागमती तीनों में देखने को मिलता है। अपितु नागमती का विरह लौकिक व सामंती व्यवस्था पर ~~अंगुली~~ प्रहार करता है।

मध्यकालीन नारी दासता में जकड़ी हुई थी। उसके लिए ~~सं~~ तुलसीदास जी ने कहा- "कत विधि सृजी नारि, पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं"। आदिकाल में नारी को भोग की वस्तु समझा गया- 'जाकी कन्या सुन्दर देखी, वा पर धरी जाय तलवार।' परंतु मध्यकाल में राजा परस्त्री गमन तथा अलाउद्दीन जैसे शासक युद्ध तक करने के लिए तैयार थे।

नागमती का विरह एक तो पति के बिछड़ जाने से है तथा दूसरा पति द्वारा दूसरी स्त्री के लिए त्याग देना है। रत्नसेन प्रेम का सच्चा पथिक है किंतु सामाजिक रूप से यह उदात्त नहीं कहा जा सकता। नागमति का विरह ~~[illegible]~~ परलौकिक सुख के लिए नहीं है जो कबीर के यहाँ देखने को मिलता है। ~~[illegible]~~ नागमति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~कहानी~~ कहती है– "सौ सरग न चहौं ... चाहि ओहिकर ~~दस~~ दरसन पावा।" अर्थात् वह सिर्फ अपने पति से मिलना चाहती है।

मध्यकालीन नारी सामंती व्यवस्था में शोषण का शिकार होती है। उसकी वेदना समझने वाला कोई नहीं होता। इसलिए वह प्रकृति में भी विरह ढूंढ़ने का प्रयत्न करती है–

"बरसे मेघा झकोर झकोरी,
~~मेर~~ मोरे दुई नैन चुवे जस ओरी"

इस प्रकार नागमती का विरह एक रानी का न होकर, सामान्य स्त्री का है। यहाँ नारी को उलाहना मिलता है - ~~मूरख~~ 'मूरख मते घर नारी'। यह विरह - ~~वर्ण~~ वर्णन आचार्य शुक्ल जी ~~व~~ द्वारा भी सराहा गया है।

1½ / 15

और बेहतर करना

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कुरुक्षेत्र के काव्यरूप पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कुरुक्षेत्र' राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवि रामधारी सिंह दिनकर की युद्ध की शाश्वत समस्या पर विचार करने वाली रचना है। रचना के आकार व प्रकार के आधार पर आलोचकों में विवाद है।

डॉ. नगेन्द्र ने इसे विचारप्रधान लंबी कविता कहा। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इसे महाकाव्य नहीं माना तथा एकार्थ काव्य की संज्ञा दी। कुछ समीक्षकों ने इसे प्रबंधाभास तथा कुछ ने इसे प्रगतिशील महाकाव्य कहा।

रामधारी सिंह दिनकर ने भूमिका में कहा कि यह रचना बिना युधिष्ठिर व भीष्म के पात्र के भी कही जा सकती थी। परंतु मुक्तक से बचाने हेतु इसे महाभारत से जोड़ा गया। रचना के आकार तथा सर्ग- व्यवस्था से यह तय है कि यह मुक्तक रचना नहीं है।

अगर यह प्रबंध रचना है तो इसे खण्डकाव्य या महाकाव्य किस श्रेणी में रखा जाये। महाकाव्य के गुण रचना में उपस्थित नहीं है यहां न ही नायक है,

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

न कोई घटना। यहाँ संवाद योजना उत्कृष्ट है पर जीवन की संपूर्णता नहीं है। अतः यह तुलसी के रामचरितमानस या गुप्तजी के साकेत की तरह आधुनिक अर्थों में भी महाकाव्य नहीं है।

दिनकर जी ने कुछ सर्गों के लिए स्वयं स्वीकार किया है कि वे क्षेपक के रूप में हैं (छठा सर्ग - वैज्ञानिक व तकनीक)। प्रथम सर्ग भी थोपा हुआ प्रतीत होता है। इसलिए इसे लंबी कविता मानना उचित होगा। यह विचारप्रधान कविता है जो न ही सरोज-स्मृति की तरह प्रगीतात्मक लंबी कविता व न ही 'राम की शक्ति पूजा' की तरह कथात्मक लंबी कविता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ कलम के सिपाही, समाज के पथ-प्रदर्शक व ग्रामीण संरचना के मर्मज्ञ प्रेमचंद के कालजयी उपन्यास 'गोदान' से उद्धृत हो यहाँ मालती के द्वारा प्रेम की आधुनिक चेतना अभिव्यक्त हुई है।

व्याख्या :- मालती - मेहता के आक्रामक प्रेम को स्वीकार नहीं करती है। यहाँ प्रेम को संदेह व संकोच से ऊपर तथा एक जीवन-मूल्य माना गया है। प्रेम दैहिक आवश्यकताओं की नहीं, मन, हृदय की आवश्यकताओं को पूरा करता है। हिंसा जैसे तत्व प्रेम जैसे उच्च आदर्शों के सामने तुच्छ है।

प्रेम में पूर्ण आत्मसमर्पण, प्रतिबद्धता की जरूरत है। अहं का विसर्जन होना आवश्यक है। मंदिर का उदाहरण देकर मालती कहती है यहाँ अधिकार की चेष्टा वाला परीक्षक नहीं, एक दैन्य भाव वाला उपासक चाहिए।

विशेष :- 1) प्रेमचंद का प्रेम दर्शन छायावाद की परिकल्पना के करीब है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) ऐसा प्रेम मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन' की मल्लिका में दिखता है वह कहती है- "माँ मेरा प्रेम अधिकार नहीं चाहता। मैंने भावना में भावना का वरण किया है,"

3) सूत्र शैली का प्रयोग है- "वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है।"

4) उदाहरण शैली भी है - मंदिर के उपासक का

5) भाषा काव्यात्मक है, पारदर्शी है।

यह प्रेम का शाश्वत सत्य है। यहाँ अधिकार नहीं समर्पण का महत्व है। यह प्रेम सार्वकालिक प्रासंगिकता रखता है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक से उद्धृत हैं। यह नाटक मोहन राकेश द्वारा पौराणिक पृष्ठभूमि के साथ आधुनिक रिश्तों का विश्लेषण करता है।

यहाँ कालिदास कश्मीर से लौटकर मल्लिका से मिलता है।

व्याख्या :- कालिदास मल्लिका से कहता है कि अब मुझे पहचानना शायद संभव नहीं है। यह आधुनिक संदर्भों में पहचान का संकट है।

कालिदास स्वीकार करता है कि वह बदल गया है तथा उसका परिचित नहीं रहा। वह अब मातृगुप्त बन गया है। स्वयं कालिदास अपने से दूर हो गया है।

मोहन राकेश बदलते स्त्री-पुरुष संबंधों को यहाँ व्यंजित कर रहे हैं जहाँ आत्म-निर्वासन की स्थिति है।

विशेष :- 1) यहाँ धर्म का अस्तित्ववाद नजर आता है। यह नवीन परिस्थितियों में टूटते रिश्तों को प्रदर्शित कर रहा है।

2) यह 'पहचान का संकट' इनकी कहानी 'एक और जिंदगी' में भी दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) भाषा तत्सम-प्रधान है तथा बोधगम्य है।

4) इतिहास सिर्फ तथ्यों के स्तर पर, कथानक बिलकुल आधुनिक है।

5) 'पहचानना' शब्द की आवृत्ति एक विशेष प्रभाव पैदा करती है।

यह पहचान का संकट वर्तमान में भी प्रासंगिक है। शहरीकरण व वैश्वीकरण में तकनीक एक-दूसरे में यही स्थिति पैदा कर रहे हैं।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

संदर्भ व प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ मन्नू भण्डारी की कहानी 'यही सच है' से ली गई हैं। यह 'एक दुनिया समानांतर' में संकलित है।

यहाँ दीपा निशीथ व संजय में से संजय को चुनकर खुद को सुरक्षित महसूस करती है।

व्याख्या:-
दीपा संजय की सुरक्षा को निशीथ के प्रेम की भुलकता पर महत्व देती है। वह कुछ बोल नहीं पा रही। भावनात्मक स्तर पर वह विलुप्त हो जाती है तथा बस अपने को संजय की बाँहों में समर्पित करके शांति अनुभव करती है।

वह निशीथ के प्रेम को मिथ्या मानकर संजय को स्वीकार कर लेती है। यहाँ पर दीपा प्रेम की पुरानी स्मृतियों को भुलाकर वर्तमान का आलिंगन करती है।

विशेष:- 1) प्रेम के दो मूल्यों वायवीयता व सुरक्षा में से दीपा सुरक्षा का चुनाव करती है।
2) भाषा में प्रवाह है - चेतना प्रवाह शैली।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

3) डायरी शैली - 'मैं' का प्रयोग
4) भाषा बोलचाल की भाषा है जो बोधगम्य हो

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ व प्रसंग :- प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ. रामविलास शर्मा के निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य' से उद्धृत है।

यहाँ पर तुलसी की प्रगतिशीलता स्थापित करने के लिए अंग्रेजी शासन का उदाहरण दिया गया है।

व्याख्या :- यहाँ पर शर्मा जी ने कहा है कि जो लोग मुगल समय में कोल-किरात के आखेट में पकड़े जाते थे उनको काबुल भेज दिया जाता था। इसलिए तुलसी की प्रगतिशीलता उस समय के सापेक्ष देखी जानी चाहिए अंग्रेजी जमाने में भी इनका बुरा हश्र होता था। इसलिए युगीन परिस्थितियों के सापेक्ष तुलसीदास जी का मूल्यांकन होना चाहिए

विशेष :-
1) भाषा सहज व पारदर्शी है
2) प्रगतिवादी विचारधारा

5/10

बेहतर लिखा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ - प्रसंग :-

यह पंक्तियाँ बालकृष्ण भट्ट के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास' से उद्धृत हैं।

यहाँ पर, मुहावरा शैली से हिन्दू जाति के इतिहास पर विचार किया गया है।

व्याख्या:- भट्ट कहते हैं कि जब वैदिक सम्प्रदाय की एकता टूट गयी तो अनेक समुदाय बने। यहाँ मुहावरे के माध्यम से वह कहते हैं कि बौद्ध सम्प्रदाय व पुराणों के बाद से हिन्दू समुदाय में विभाजन होते गये। यह विभाजन आज भी जारी है। नये मत व धर्म इस भूमि पर बनते रहे।

विशेष:- 1) हिन्दू जाति का प्रयोग परंपरावादी व पुनरुत्थानवादी विचारों का द्योतक है।

2) भाषा तत्सम व सरल है।

और बेहतर करें। 5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कलम के सिपाही प्रेमचंद की सबसे महत्वपूर्ण रचना 'गोदान' उपन्यास है। यह कृषक जीवन व ग्रामीण यथार्थ का शहरी जीवन से साक्षात्कार करवाता है। इसका शीर्षक इसे और अधिक विशिष्ट बना देता है।

'गोदान' हमेशा रचना के केन्द्र में है। गाय के साथ प्रारंभ होता है। किस गाय एक किसान की लालसा है, उससे स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था (बैल के द्वारा), धर्म, सामाजिक प्रतिष्ठा सब कुछ जुड़ा हुआ दिखाया गया है। होरी गाय लाकर प्रसन्न होता है, तो धनिया को आशंका रहती है कि इसके साथ कहीं ईश्वर कोई विपत्ति न भेज दे। उसी रात वह विपत्ति भी आ जाती है।

गाय के कारण ही होरी को जमीन बेचनी पड़ती है, रुपा को बेचना पड़ता है। अंतत: वह कृषक से मजदूर बनने को मजबूर हो जाता है। इस प्रकार मरते समय भी गाय कामधेनु की तरह होरी की आँखों के सामने आती है।

धनिया से अंत में पण्डित भी गोदान की बात कहता है। प्रेमचंद का उद्देश्य भी इस

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शीर्षक से प्रेषित हो रहा है। प्रेमचंद ~~शीर्षक~~ यहाँ किसान जीवन की मूलभूत व सामान्य समस्याओं से गाय के द्वारा अवगत कराते हैं। गोदान का क्रियाकर्म भारतीय संस्कृति के केन्द्र में है। परंतु एक किसान की सामान्य जरूरतें पूरा न होना एक विडम्बना है जो आज भी अन्नदाता के सामने उपस्थित है।

यह शीर्षक संभावनाओं से भी युक्त है तथा बिंबधर्मी भी है। शीर्षक पाठक के मन में कौतूहल पैदा करता है तथा गाय का चित्र बिंब के रूप में अंत तक ● कहानी के साथ चलता है।

यह शीर्षक संक्षिप्त भी है। शीर्षक उद्देश्य प्रधान, चरित्र प्रधान या परिस्थिति प्रधान हो सकते हैं; ● 'गोदान' शीर्षक आषाढ़ का एक दिन (परिस्थिति प्रधान), दिव्या, स्कंदगुप्त (चरित्र-प्रधान) तथा भारत-दुर्दशा (उद्देश्य प्रधान) से भिन्न है। यह प्रेमचंद की कला है जो इतनी उत्कृष्ट रचना के भाव को एक संक्षिप्त, बिंबधर्मी व प्रतीकात्मक शीर्षक के रूप में व्यक्त किया है।

11/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की श्रेष्ठता के कारणों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद कथा-सम्राट हैं तथा हिन्दी कहानी की दशा व दिशा उन्होंने निर्धारित की। 'ईदगाह' उनकी सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। यहाँ बाल-मनोविज्ञान की प्रौढ़ता को दर्शाया गया है। यह संवेदना व शिल्प दोनों स्तर पर श्रेष्ठ है।

कहानी एक मुस्लिम परिवार के बच्चे की है जो अपनी दादी आमीना के साथ रहता है। जिस तरह प्रेमचंद ने एक मुस्लिम परिवेश में प्रवेश किया वह उनकी भाषा हिन्दुस्तानी में भी समन्वित होता है। यह एक समन्वयवादी चेतना का परिणाम है।

कहानी एक बालक की अभावों के कारण प्रौढ़ता प्रदर्शित करने से श्रेष्ठ है परंतु यह सभ्य समाज के मुँह पर एक तमांचा है। जहाँ सूरदास के बाल-कृष्ण चाँद-खिलौने की माँग करते हैं वहीं यहाँ पर हमीद चिमटा खरीदने पर मजबूर है।

कहानी में मुख्य कथा के साथ प्रशासनिक व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे विषयों पर बाल-मनोविज्ञान की सहायता से व्यंग्य किया गया है। शिक्षा पर बालक कहते हैं - 'इतने बड़े हो गये, अभी तक स्कूल जाते। क्या करोगे इतना पढ़कर।' यह आज की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बेरोजगार जनता का भी प्रश्न है। इसी प्रकार पुलिस वालों पर- "अजी हजरत! यही चोरी करवाते हैं।" साथ ही कहते हैं कि कानून की गर्मी चढ़ जाती है। इस प्रकार व्यंग्यात्मक भाषा के द्वारा प्रशासन की सच्चाई उजागर की गई है।

शिल्प में भी कहानी श्रेष्ठ है। कथानक सुसम्बद्ध है जिसमें आदि, मध्य व अंत संयोजित क्रम में हैं। उर्दू शब्दावली इसे व्यावहारिक बनाती है। यह कहानी व्यक्तिगत मनोविज्ञान को दर्शाती है जो अंत में व्यक्त होता है- "बच्चे हमिद हामी हमीद ने बूढ़े हमीद तथा बुढ़िया आमीना ने बच्ची आमीना का पार्ट खेला।" अतः यह कहानी संवेदनात्मक व कलात्मक दोनों स्तर पर श्रेष्ठ है।

ठीक है
$8\frac{1}{2}$ / 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'यही सच है' कहानी मन्नू भण्डारी के द्वारा लिखी गई है। यहाँ पर प्रेम की कसौटी छायावादी रोमानीपन है या सुरक्षा व व्यावहारिकता है, इस पर चर्चा की गई है। कहानी में शिल्प के स्तर पर नयापन है।

यह कहानी डायरी शैली में लिखी गई है। डायरी शैली में दीपा का पात्र 'मैं' के रूप में उपस्थित है। 'मैं' शैली का प्रयोग दीपा के चरित्र को पूरी तरह उभारता है। डायरी जीवन का सच सच व्यक्त करती है, इसलिए दीपा के चरित्र को कुछ कुछ समीक्षक समीक्षकों ने नैतिक नहीं माना। परंतु निशीथ व संजय के पात्र मुखर नहीं होने के कारण यह आरोप तार्किक नहीं प्रतीत होता।

यहाँ पर चेतना प्रवाह शैली भी मुखर हुई है। दीपा का चरित्र पल-पल प्रेम के चिंतन में बदलता है। वह एक अनिर्णय की स्थिति से गुजरती है। उसकी प्रेम की पुलक नी निशीथ के साथ तथा सुरक्षा संजय के साथ मिलती है।

कहानी में पात्रों की संख्या कम है, यह 'एक पुनिया: समानांतर' कहानी संग्रह की सबसे अधिक आत्म-विश्लेषण व चिंतन प्रधान कहानी है। घटनाएँ भी एकाध ही हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मन्नू भण्डारी इस कहानी में चिंतन व विश्लेषण को अधिक विस्तार देती हैं जिससे प्रवाह में बाधा आती है। परंतु यह बाधा इसे प्रेम की सूक्ष्मता के स्तर पर ले जाती है। प्रेम व घृणा जैसे विरोधी भाव जितने विरोधी प्रतीत होते हैं उतने हैं नहीं।

इस प्रकार 'यही सच है' का शिल्प नयी कहानी के करीब है। कथानक 'टूटना' के जितना नहीं टूटा है। परंतु पात्रों की संख्या कम व अनिर्णय की स्थिति जैसी विशेषताएँ विद्यमान हैं।

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'गोदान पर छायावादयुगीन नारीत्व परिकल्पना, प्रेमदर्शन एवं रोमांटिक दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रभाव है।' इस कथन की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

छायावाद में प्रेम की वायवीय परिकल्पना तथा भावना के धरातल पर प्रेम को परखने का चित्रण है। नारी परिकल्पना प्रसाद की कामायनी व रोमांटिक दृष्टिकोण महादेवी वर्मा के रहस्यवाद में परिलक्षित होता है।

'गोदान' में छायावादी प्रभाव मालती-मेहता प्रसंग पर दिखाई देता है। मालती देशी आधुनिकता को स्थापित करने वाली पात्र है। प्रेमचंद का नारी दर्शन यहाँ दिखता है। मालती प्रारंभ में - 'जित बाहर से तितली व अंदर से मधुमक्खी।' अंत में मालती एक सामाजिक, बौद्धिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं के लिए जागरूक महिला के किरदार में दिखती है। वह मेहता के खूँखार प्रेम का प्रतिकार करते हुए कहती है- "मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। प्रेम देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है।" यही विचार प्रसाद के 'कामायनी' में भी है-

"भूल गये हम पुरुषत्व मोह में कुछ सत्ता है नारी की
समरसता संबंध बनी अधिकार- अधिकारी की।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमदर्शन छायावादी व सामाजिक दायित्व-स्वीकृति दोनों स्तर पर गोदान में दिखता है। धनिया का दाम्पत्य प्रेम - '.. इस विपन्नता के अथाह सागर में सुहाग ही वह तृण था...'। इसी प्रकार प्रेम के प्रति प्रतिबद्धता, एकनिष्ठ प्रेम सिलिया, झुनिया, सोना के चरित्रों में दिखता है। यह छायावाद से भिन्नता भी रखता है। यहाँ झुनिया को जुगनू की चमक नहीं, दीपक का स्थायी प्रकाश चाहिए।

रोमांटिक दृष्टिकोण गोबर-झुनिया व मालती-मेहता में दिखता है। खन्ना का रोमांस कृत्रिम व दैहिक प्रतीत होता है जो छायावादी नहीं है।

सरोज प्रेम-विवाह करने का साहस रखती है। छायावाद में प्रेम को छिपाने के लिए महादेवी वर्मा रहस्यवाद का सहारा लेती हैं - 'मेरे प्रियतम को भाता है, तम के परदे में आना।' परंतु सरोज कहती है - 'आज की स्त्रियाँ विवाह को पेशा नहीं बनने देंगी। वह अब विवाह प्रेम के आधार पर करेंगी।'

अतः गोदान में प्रेमदर्शन सामाजिक व व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर अलग स्वरूप में है। व्यक्तिगत स्तर पर छायावादी परिकल्पना दिखाई देती है परंतु यहाँ समाज से विमुखता नहीं है अपितु नयी आदर्शों

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

की चेतना खुलकर धनिया सरीखे पात्रों से हुई है। इसलिए प्रेमचंद की नारी-दृष्टि व रोमांटिक दृष्टिकोण मौलिक है। जिस पर छायावाद का प्रभाव आंशिक रूप से है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'वर्ग-मनोविज्ञान के अंकन में प्रेमचंद सिद्धहस्त है।' प्रेमचंद की कहानियों के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद ने 300 से अधिक कहानियाँ लिखी। इनकी कहानियाँ सारे वर्गों का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रेमचंद के अनुसार साहित्य का उद्देश्य समाज का दीपक व दर्पण होने में है। अतः उन्होंने घटना, चरित्र व कथानक सामान्य परिवेश से लिया है।

नारी-मनोविज्ञान उनकी 'बड़े घर की बेटी', 'अलग्योझा', 'नया विवाह' जैसी कहानियों में देखा है।
'आनंदी स्त्रीस्वाभावानुसार रोने लगी' - यह बड़े घर की बेटी में नारी मनोविज्ञान का उदाहरण है।
इसी प्रकार प्रेमचंद का अन्य उदाहरण -
पन्ना रूपवती स्त्री थी, तथा रूप व गर्व का चोली-दामन का साथ है। (अलग्योझा)

दलित मनोविज्ञान भी उनकी 'सद्गति' व 'दूध का दाम' कहानियों में अभिव्यक्त हुआ है। इसके उदाहरण-
"पण्डित लोग पवित्र होते हैं... एक चमार इनके घर कैसे जा सकता है।" - हीनता ग्रंथि का चित्रण
"... पण्डित होंगे तो अपने घर के..."
- जागरण के भाव

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार 'सभ्यता का रहस्य' कहानी में किसान मनोविज्ञान प्रदर्शित हुआ है। 'किसान अपने बैलों को पुत्रों की तरह समझते हैं।' यह इसका एक उदाहरण है।

वृद्ध मनोविज्ञान इनकी 'बूढ़ी काकी' कहानी में हुआ है जहाँ पर वृद्धावस्था की समस्या का चित्रण किया गया है। उदाहरण-

"वृद्धापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।"

इसी प्रकार बाल मनोविज्ञान भी इनकी गुल्ली-डंडा जैसी कहानियों में व्यक्त हुआ है। 'ईदगाह' में व्यक्तिगत ~~की प्रकार~~ मनोविज्ञान दिखाई देता है।

अतः प्रेमचंद वर्ग मनोविज्ञान में सिद्धहस्त हैं। यह मनोविज्ञान जीवन गहरी समझ व अनुभव का परिणाम है। यह अज्ञेय व जैनेन्द्र के सैद्धांतिक मनोविज्ञान से भिन्न है।

Good 9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेन्द्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'नई कहानी' आजादी के बाद के मोहभंग व निराशा, शहरीकरण, यांत्रिकीकरण से उत्पन्न स्थितियों को व्यक्त करती है। यहाँ अज्ञेय, मोहन राकेश, कमलेश्वर व राजेन्द्र यादव की कहानियाँ प्रमुख हैं।

नई कहानी में कथानक बिखरा हुआ होता है कथानक का कोई प्रारंभ, मध्य व अवसान नहीं होता। 'टूटना' कहानी भी इसी कथानक को धारण किये हुये है। किशोर व लीना के बेमेल विवाह के कारण उत्पन्न स्थितियाँ यहाँ प्रदर्शित हैं अतः कोई उद्देश्य नजर नहीं आता। यहाँ घटनाएँ न के बराबर हैं तथा पात्र सीमित हैं।

'टूटना' कहानी मनोवैज्ञानिक स्तर पर गहराई में जाती है। यहाँ अनिर्णय की स्थिति दिखाई गई है। अनिर्णय को मध्यवर्ग की विशेषता बताया गया है। उच्च वर्ग के पास संसाधन होते हैं इसलिए वह असफलता से डरता नहीं है।

'टूटना' आधे-अधूरे चरित्रों की कहानी है। किशोर व लीना दोनों में वर्ग अंतराल, जीवन-शैली का अंतर है। दोनों को एक दूसरे में कमी नजर आती है।

यहाँ पर प्रेम, घृणा, नफरत तथा सहानुभूति

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे भावों को एकसाथ व सहचर दिखाया गया है।

यहाँ पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया गया है। भाषा महत्वपूर्ण है। अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। इस प्रकार 'टूटना' कहानी में नई कहानी के सारे तत्व उपस्थित हैं।

नई कहानी में पहचान का संकट है तथा पात्रों में लघुमानववाद की स्थिति है। यह स्थिति उन्हें परिस्थितियों का गुलाम बना देती है। राजेन्द्र यादव कहते हैं- "30-35 की उम्र में उत्साह होता है। 40-42 तक थकान उसकी शक्ति को चूस लेती है। वह टूट जाता है।"

अतः नई कहानी के सारे तत्व संवेदना व शिल्प दोनों स्तर पर इस कहानी में उपस्थित हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation